ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उत्तराखण्ड के शहरों में बौद्व धर्म का प्रसार

डॉ0 दयाधर प्रसाद सेमवाल

सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अगस्त्यमुनी (रुद्रप्रयाग)

धर्म संसार का आधार है , धर्म 'धृ' धातु से निश्पत्र होता है जिसके अर्थ धारण करना है। महाभारत में इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है –

धारणात् धर्म मित्याद्रु धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्वारण संयुक्त स धर्म इति निि यतः।।

अर्थात धर्म सभी प्राणियों की रक्षा करता है। सभी को सुरक्षित रखता है यह सृष्टि का अस्तित्व बनायें रखता है। मनुस्मृति में धर्म के चार स्त्रोत – बेद स्मृति,सदाचार , आत्मतुस्टि बतायें गये हैं। धर्म से तात्पर्य आचरण की उस संहिता से है जिसके माध्यम से मनुष्य नियमित होते हुये विकास करता है। और अन्तोगत्वा परमपद (मोक्ष) को प्राप्त होता है।

भारतीय संस्कृति में अनेक धर्मो का समावेश हुआ है इनमें छठी शताब्दी ईसा पूर्व में प्रकट होने वाला एक प्रमुख धर्म जिसने काफी समय तक एक बड़े भू – भाग पर प्रसिद्ध धर्म के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की वो था ''बौद्व धर्म'' । बौद्व धर्म आर्यों के परम्परागत 'सनातन धर्म' की ही एक शाखा के रूप में उदित हुआ इस धर्म का विकास वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' के सिद्वान्त के विरोध में हुआ था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इसी सिद्वान्त से गेरूवा वस्त्र धारण करने वाले अनुयायी बौद्व अनुयायी के नाम से प्रसिद्ध हुए, इन्हीं से इस धर्म की उत्पत्ति हुई । इन अनुयायियों को संगठित करने वाले महान व्यक्ति महात्मा बुद्व कहलाये। महात्मा बुद्व में बुद्व शब्द का वास्तविक अर्थ भी प्रकाशमान अथवा जागृत्त होता है। अथति गेरूवा वस्त्र के अनुयायियों को जागृत करने वाले महात्मा बुद्व कहलाये।

इस धर्म के जागृत होने का प्रमुख कारणों उत्तरवैदिक काल के धर्म का आडम्बर युक्त होना है। इस काल में धर्म एवं मोक्ष का मार्ग अत्यन्त जटिल बन चुका था। सनातन धर्म में मनुश्य के जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना था। परन्तु इस

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

आडम्बरता से यह मार्ग कठिन हो चुका था ।और लोग दिग्भ्रमित होते जा रहे थे ऐसी स्थिति में कपिल वस्तु के राजा युद्धोधना के राजकुमार सिद्धार्थ ने गहन तपस्या व चिन्तन के 'प चात् मोक्ष प्राप्ति के सरल व प्रभस्त रूप को संसार के समक्ष रखा और इसे निर्वाण नाम दिया । बौद्ध धर्म के अनुसार आत्म ज्ञान व आत्म नियंत्रण मोक्ष प्राप्ति का आधार है तथा इन्हें प्राप्त करना ही निर्वाण प्राप्त करना है।

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत से ही हुई है। लेकिन शीध्र ही इस धर्म ने अपना प्रभाव विश्व के अनेक देशों में स्थापित कर दिया । इस धर्म को क्षेत्रीय धर्म से विश्व धर्म बनाने में सबसे महत्वापूर्ण भूमिका मौर्य सम्राट अशोक द्वारा निभाई गयी। सम्राट अशोक द्वारा महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के प्रतीक स्वरूप अनेक स्थानों पर बौद्ध स्तूपों का निर्माण कराया ये पुरात्तत्विक साक्ष्य ही आज भी इस धर्म के तात्कालीक प्रभाव एवं वैभवता को दृश्टिटांकित करते हैं।

भारत में इस धर्म का प्रचार प्रसार महात्मा बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिये गये प्रथम उपदेश (धर्मचक्रपर्वतन) से होता है। इसके पश्चात् भगवान बुद्ध द्वारा अपने जीवन काल में की गयी धर्म – यात्रायें जिसमें बौद्ध गया,लुम्बनी,कपिलवस्तु,श्रावस्ती , कुशीनारा,अवन्ती आदि स्थानों से इस धर्म का प्रचार – प्रसार (273 – 232 ई0 पू0) हुआ । भगवान बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् मौर्य सम्राट अशोक द्वारा इस के प्रचारार्थ धर्म प्रचारकों को विभिन्न स्थानों में धर्म प्रचार के लिए भेजा गया। जिसमें मज्जान्तिफ – काश्मीर व गांधार ,महारक्षित यवन देश, मज्जिम – हिमालय देश, धर्म – रक्षित – अपरान्तक,महाधर्मरक्षित – महाराष्ट्र,महादेव – महिशमण्डल (मैसर), रक्षित – बनवासी (उत्तरी कन्नड), सोन एवं उत्तरा – सुवर्णभूमि (वर्मा) महेन्द्र व संघमित्रा – श्रीलंका आदि ने इन स्थानों पर जाकर बौद्ध धर्म का प्रसार – प्रचार कर इस धर्म को वि व प्रसिद्ध धर्म बना दिया था ।

उत्तराखण्ड जो कि अनादिकाल से देवता एवं दानवों की रंग स्थली ,ऋशि – मुनियों ,की तपः : स्थली,देवभूमि के नाम से प्रसिद्व रही है। इसलिए यह स्थान सभी धर्मो के आकर्षण का केंन्द्र रहा है, इसमें बौद्ध धर्म भी प्रमुख है। यदपि उत्तराखण्ड में बौद्ध धर्म का प्रवेश कब हुआ यह अभी भी शोध का विषय है । परन्तु बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि गढ़वाल हिमालय के दक्षिण भाग शाबर में एक मार्ग बुद्ध कालिन्द शाक्य कलाम, भग्य ,कोलिया मल्ल, और लिच्छवी जनपदों के निगमों से व्यापारिक मार्ग हिमालय की तलहटी से होकर अहिक्षत्र,गोविशाण,कालकूट और स्तूधन होकर भााकल पहूॅचता था। भगवान बुद्ध इसी मार्ग से चलकर कनखल के निकट उशीरगिरि (चंड़ी की पहाड़ी) हरिद्वार , (जिसे महाभारत में उशीरगिरि,तथा बौद्ध साहित्य में उशीर हवज या उहोगंग कहा गया है) पहुॅचे थे। इससे यह स्पष्ट

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

होता है। कि उत्तराखण्ड के पादतलीय क्षेत्रों में बौद्ध धर्म का प्रसार भगवान बुद्ध के जीवनकाल में ही हो चुका था । इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध अपने जीवनकाल में ही गोवशाण से लेकर अहोगंगा तक का तराई का सम्पूर्ण भाग अपने चरणकमलों से पवित्र कर चुके थे।

बौद्ध जातकों के अनुसार उत्तराखण्ड में गंधमादन के निकट नंदमूलत पर्वत प्रत्येक बौद्ध अनुयायियों की तपोभूमि हुआ करता था जो संभवतः नंदादेवी पर्वत का पादप्रदेश था और सैकड़ो बौद्धों की तपस्थली होने के कारण बधान /बधाग/बौद्धायन कहा जाने लगा।

अहोनंग/अधोगंग (इसकी पहचान हरिद्वार में कनखल के निकट की पहाड़ी से की जाती है। में बौद्धमत का महत्वपूर्ण केंन्द्र स्थापित हो जाने से उत्तराखण्ड के कविदेनेरथों ने भी इस धर्म को संरक्षण व बढ़ावा दिया है। और अपनी मुद्रओं पर चैत्यों एवं बौद्धिवृक्षों का अंकन कराया है। गंगाद्वार के निवासियों द्वारा शरहुत के स्तूप व निर्माण में भी योगदान दिया है। भरहुत के दानलेखों के अनुसार मोरगिरि के निवासी घटिल माता की जितमित्र व स्तूपदास ने इस स्तम्भ के निर्माण के लिए दान दिया। अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि बुद्ध के जीवनकाल में एवं उसके कुछ वर्षों बाद यह धर्म उत्तराखण्ड में प्रसारित हो चुका था।

बौद्ध धर्म का प्रचार – प्रसार विश्व के अधिकांश भागों में व उत्तराखण्ड में करने का श्रेय पूर्णतः मौर्य सम्राट अशोक को जाता है। कंलिग युद्ध (261 ई0 पू0) में हुई हिंसा ने अशोक के हृदय को ऐसा द्रवित्त किया कि इसके बाद अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाया और जीवन्त पर्यन्त इस धर्म की सेवा कर इसे विश्व का प्रमुख धर्म बना दिया। बौद्ध ग्रन्थ महांवश के अनुसार अशोक के समय (251 ई0 पू0) में मोग्यलियुत्र तिस्य की अध्यक्षता में तृतीय बौद्ध संगिति का आयोजन पाठलिपुत्र में किया गया। एवं इसके पश्चात् हिमालय एंव उत्तराखण्ड बौद्ध धर्म का प्रचार करने या धर्म विजय के लिए मज्झिम व उनके चार साथियों को भेजा गया। महावंश के अनुसार इन चारों के साथ मज्झिम ने हिमालय प्रदेश में धर्मचक प्रवर्तन का उपदेश दिया । व अलग – अलग पॉच देशों (हिमालय के पांच) खंण्डों (नेपाल, मानसखंड,केदारखंड,जालंधर व क मीर) में बौद्ध धर्म के श्रद्धालु बनायें। हिमालय का यह प्रदेश उस समय मौर्य सामाज्य के अन्तर्गत आता था। मौयेकाल में उत्तराखण्ड का दक्षिणी,पश्चिम,भाग (देहरादून कालसी क्षेत्र) बौद्ध धर्म का प्रदान केन्द्र बन चुका था । कालसी में अशोक ने बुद्ध के धर्मेप्रदेश के स्मृति में शिलालेख उत्कीर्ण कराया जो आज भी मौजूद है। एवं इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म का प्रसार हो चुका था। यह अभिलेख 257

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

ई0 पू0 में उत्कीर्ण करवाया गया। यह पालि भाषा में है इस अभिलेख में अशोक द्वारा घोषणा की है उसने राज्य के हर स्थान पर मनुश्य व पशुओं की चिकित्सा व्यवस्था की है इसमें लोगों को हिंसा त्यागने तथा अहिंसा को अपनाने की बात की गयी है।

इस लेख में यहॉ के निवासियों के लिए 'पुलिद' तथा इस क्षेत्र के लिए 'अपरांत' भाब्द प्रयुक्त किया गया है। इसके अतिरिक्त लाखामंण्डल, सिरोली मंडल ,एवं माणा से अ ोक के ि ालालेख प्राप्त हुए है। जो इस बात को स्पश्ट करते हैं कि इस क्षेत्र में अशोक के समय पूर्णतः बौद्ध धर्म का प्रसार हो चुका था।

उत्तरकुरू नाम से प्रसिद्ध कृमायूॅ मण्डल में ईसासन की प्रारम्भिक शताब्दियों के आस – पास बौद्ध धर्म का प्रसार हो चुका था । टनकपुर के पास सेनापानी तथा सुदलीमठ से प्राप्त भुंगकालीन बौद्ध स्तूप इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि कुमाउॅ में बौद्ध – धर्म का प्रसार खस जातियों के समय में हुआ है। मानसखंड के अनुसार चंपावत कें बाले वर मंन्दिर से आगे बढ़ने पर तीर्थयात्री बौद्ध तीर्थ में पहुॅचते हैं । इससे स्पष्ट होता हैं कि गौतम बुद्ध या इनके कोई भिक्षु इस स्थान पर रहे होगे इसलिए इसे बौद्ध तीर्थ कहा गया है। इसके अतिरिक्त बागे वर से प्राप्त बहु प्रतिभा डंगोली (रानीखेत से प्राप्त बुद्ध की आकर्षण प्रतिभा) देवीधुरा में रणथिला के ऊपर निर्मित चबूतेर पर अपने शिश्यों को धर्मोपदेश देते हुए बुद्ध की प्रतिमा गंगोलीहाट में जान्धवे नौले के अभिलेखानुसार वहॉ के शासक राजचंन्द्र देव के द्वारा निर्मित मठ, कुमाऊॅ वि0 वि0 अल्मोड़ा परिसर के संग्राहलय में सुरक्षित योगमुद्रा में बौद्ध प्रतिमा, लखेटा (अल्मोड़ा) प्राप्त बौद्ध देवी तारा की प्रतिमा व इसके अतिरिक्त क्वाली, बागे वर बुयाला से प्राप्त बौद्ध पुरातात्विक साक्ष्य ,कुमाऊॅ मंडल के तराई में स्थित गोविशाण जहॉ के बारे में उल्लेख है कि भगवान बुद्ध स्वंय यहॉ आये थे। जिसका उल्लेख चीनी यात्री हेनसांग करता है। तथा लिखता है कि यहॉ मठ में 100 भिक्षु निवास करते थे से स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र था । यहॉ बौद्ध धर्म की शुरूआत महात्मा बुद्ध के जीवनकाल में हो चुकी थी लेकिन मौर्य काल में यह स्थान पूर्णतः बौद्ध केन्द्र बन चुका था और लगभग 12 वी शताब्दी तक यह क्षेत्र प्रमुख बौद्ध केन्द्र के रूप में रहा है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

संन्दर्भ ग्रन्थ –

i. श्रीवास्तव के0 सी0 2000,प्राचीन भारत का इतिहास, और संस्कृति ,यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद ।

ii. बाशम, ए0 एल0 अदृभूत भारत , शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा।

iii. शर्मा डी0 डी0 2003 उत्तराखण्ड का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास उत्तराखण्ड प्रकाशन हन्द्वानी।

iv. कठोव यशवंत सिंह 2006 उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास , विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून ।

v. डबराल शिव प्रसाद उत्तराखण्ड का इतिहास भाग – 8,9,10 वीरगाथा प्रकाशन दुगड़डा ।

vi. सांकृत्यायन राहुल,कुमाऊॅ,ज्ञानमंण्डल लि0 वारांणसी।

vii. रतूड़ी हरिकृश्णा 1995 गढ़वाल का इतिहास भागीरथी प्रकाशन सुमन चौक टिहरी।

viii. प्रेम हरिहर लाला 2006 दूनघाटी की गाथा , ग्रीन फील्डस।

ix. बी0डी0 कुमाऊॅ का इतिहास अन्मोड़ बुक डिपो अन्मोड़ा ।

x. एटकिंशन ई0टी0 1994,कुमाउॅ हिल्स ,कास्मों पब्लिकेशन नई दिल्ली।

www.ijahms.com